

हिंदी टंकण परीक्षा—जुलाई, 2014

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

हिंदी शिक्षण योजना (परीक्षा स्कंध)

प्रश्न-पत्र—द्वितीय

बैच-II

समय : 10 मिनट

पूर्णांक : 50

क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। भला संसार में ऐसा कौन सौभाग्यशाली मनुष्य	90
होगा कि जिसे क्रोध न आता हो। क्रोध मनुष्य के स्वभाव में ही सम्मिलित होता है। यह मानव	183
के अन्दर साक्षात् रूप से विद्यमान होता है। क्रोध पर नियंत्रण रख पाना सामान्य मनुष्य के	273
वश की बात नहीं है। प्रायः सभी प्राणियों को थोड़ा कम या थोड़ा अधिक क्रोध अवश्य ही आता	377
है। क्रोध हर समस्या की जड़ है। इसकी चपेट में बड़े-बड़े संत, विद्वान तक आ जाते हैं।	470
भगवान परशुराम, ऋषि दुर्वासा का क्रोध कौन नहीं जानता। हर आदमी क्रोध पर नियंत्रण तो	572
चाहता है, इससे छुटकारा तो पाना चाहता है। वह क्रोध से छुटकारा पाने के कई उपाय तलाश	667
करता है। और इस तरह के कई तरीके भी मनुष्य ने ढूँढ निकाले हैं, जैसे-जब मनुष्य को क्रोध	769
आए तो मनुष्य को एक गिलास पानी पी लेना चाहिए। दूसरे वह जिस भी भगवान को मानता	853
हो उस भगवान को याद करे तो इससे उसे अवश्य शांति का अनुभव होगा। और यदि उसने किसी	945
महात्मा या संत को गुरु बनाया हो तो उसके द्वारा दिए गए मंत्र का जाप शुरू करे। इस तरह	1032
यदि मनुष्य इस तरह के अनेक और उपायों का उपयोग करेगा तो उसे क्रोध पर नियंत्रण पाने	1122
में सफलता अवश्य मिलेगी। क्रोध समाप्त होना तो बहुत ही कठिन काम है, परंतु हां इस	1210
तरह के उपायों को अपनाकर उसका क्रोध अवश्य कम तो होगा ही। इस पर नियंत्रण पाने के	1301
लिए हमें सबसे पहले उसका कारण जानना चाहिए। आखिर मनुष्य को क्रोध क्यों आता है।	1391
इसका सबसे पहला और मुख्य कारण है जब मनुष्य जैसा मन से चाहता है और जो वह	1475
चाहता है यदि उसकी कामना या इच्छा पूरी नहीं होती तो मनुष्य में भयंकर क्रोध की उत्पत्ति	1573
होती है। फिर उस मनुष्य का मन और तन अपने नियंत्रण में नहीं रहता। उसकी बुद्धि	1657
विवेक शून्य हो जाती है। उसे नहीं पता होता कि वह जो कुछ भी कर रहा है, उसका क्या	1743
परिणाम निकलेगा। जब बुद्धि शांत होती है तब तक सारा खेल खत्म हो चुका होता है।	1831
किसी संत ने ठीक ही कहा है - मनुष्य को सबसे पहले किसी भी शब्द को या	1905
वस्तु को पहले स्वयं सुनना या देखना चाहिए। इसके बाद उसके बारे में पूरी तरह शांति	1991
से उस पर चिंतन करना चाहिए। उसके अच्छे बुरे परिणाम पर विचार करना चाहिए।	2065
आज का मनुष्य सब कुछ बड़ी जल्दी पाना चाहता है। वह कड़ी मेहनत के बल पर	2139
नहीं सब कुछ मुफ्त में पाना चाहता है। संसार में आप किसी भी महान बड़े व्यक्ति की	2226
जीवनी पढ़ कर देखें। ऐसा आपको एक भी महान आदमी नहीं मिलेगा जिसने बिना	2303

कृ.पू.उ.

मेहनत के बिना कठिन परिश्रम के अपना जीवन बिताया हो । वह हर कदम पर तपता	2375
हुआ ही आज विश्व के महान शिखर पर पहुंचा है । हर पल वह अपने जीवन में हर	2453
बार कठिन से कठिन परीक्षाओं से गुजरता हुआ ही महानता के शिखर पर पहुंचा है ।	2537
उसे भी अपने जीवन में ईर्ष्या, द्वेष का सामना करना पड़ा होगा, यदि वह भी क्रोध	2625
के चंगुल में फंस जाता तो अपने लक्ष्य की ओर कैसे पहुंच पाता । इसलिए मनुष्य को	2706
सदैव अपने जीवन में क्रोध पर नियंत्रण पाने का प्रयास करना चाहिए । यदि वह प्रयास	2795
करेगा तो एक न एक दिन उसे सफलता अवश्य मिलेगी । पूरी तरह न सही कुछ	2867
हद तक तो वह सफल होगा ही । इसलिए मनुष्य जैसा व्यवहार अपने लिए दूसरों से	2951
चाहता है वैसा ही व्यवहार उसे दूसरों के प्रति भी करना चाहिए ।	3017